IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी प्रवासी साहित्य में समकालीन विमर्श

डॉ. तृप्ति उकास

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

शासकीय महाकोशल कला एवं वाणिज्य

स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर, म.प्र.

शोधसार

वर्तमान समय में हिन्दी प्रवासी साहित्य निरंतर वृद्धि को प्राप्त हो रहा है, यही नहीं प्रवासी साहित्य के अंतर्गत समकालीन विविध विमर्श भी उभरकर आ रहे हैं और अपनी चमक बिखेर रहे है। प्रवासी हिन्दी साहित्य ने विगत दो दशकों से अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। वास्तव में भारतीय मूल के विदेशों में रहने वाले लेखकों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी हिन्दी साहित्य कहा जाता है। जिनके साहित्य में समकालीन विविध विमर्श अपने पूरे ओज और तेज के साथ चमक को प्राप्त हो रहा है। इन प्रवासियों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है पहले वर्ग में वे भारतीय हैं जो 20वीं सदी के पूर्वार्ध तक मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिनाद, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, फिजी आदि देशों में गिरमिट के रूप में विदेशी एजेंटों द्वारा खेतों में काम करने के लिए बहला-फुसलाकर, सुखद भविष्य का सपना दिखाकर विदेश में ले जाये गए थे। दूसरा वर्ग उन प्रवासी भारतीयों का है जो बींसवीं सदी के उत्तरार्ध में सामान्यतः भारत के स्वाधीन होने के बाद विकसित देशों में जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी, पुर्तगाल, डेन्मार्क, फ्रांस और खाड़ी आदि देशों में शिक्षा अथवा बेहतर भविष्य तथा आर्थिक उन्नति की तलाश में प्रवास कर गए। नए देशों में इन लोगों को स्वयं को स्थापित करने के संघर्ष के दौरान जो अनुभव प्राप्त हुए उन अनुभवों को इन्होंने अपने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनका यही साहित्य लेखन जो उनके विविध अनुभवों से संयुक्त होकर, उनके हृदय की कोमल भावनाओं से न केवल मंडित रहा, बल्कि जीवन के विविध संघर्ष, आसपास के वातावरण, सामाजिक, सांस्कृतिक स्वरूप, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक गतिविधियों कि समष्टिगत भावनाओं से युक्त होकर समकालीन विमर्श के रूप में उभरकर सामने आया। इस प्रकार अपने यथार्थ मिश्रित वास्तविक तथा काल्पनिक लेखन के माध्यम से प्रवासी साहित्यकार निरंतर प्रसिद्धि को प्राप्त हो रहे हैं।

प्रवासी हिन्दी साहित्य एक भिन्न संवेदना एवं सरोकार का आस्वादन करता है। प्रवासी हिन्दी साहित्य हिन्दी पाठकों , शोधकर्ताओं के लिए एक नई दिशा है। यह साहित्य अपने आप में समकालीन विमर्श की अभिव्यक्ति है। इसमें कथानक और पात्र निरंतर नवीनता को धारण किए हुए हैं। जिसके द्वारा हम स्वदेश विदेश के मध्य अपने ही लोगों की विभिन्न समस्याओं को देख पाते हैं। भारतीय हिन्दी साहित्य की तुलना में प्रवासी हिन्दी साहित्य अत्यल्प है, लेकिन फिर भी अलग ढंग से प्रस्तुत होने के कारण वह स्वयं में विशिष्ट है। उसकी अभिव्यक्ति शैली दूसरों से नितांत भिन्न है। हिन्दी प्रवासी साहित्य में भारतीयों के जीवन व उनकी समस्याओं से परिचित कराने का सफल प्रयास किया गया है। हिन्दी साहित्य के विशाल सागर में प्रवासी

हिन्दी साहित्य एक उभरती हुई मौलिक विषय-वस्तु और नूतन अभिव्यक्ति शैली के रूप में एक नई जमीन को तैयार करने वाला है। जिससे आने वाली पीढ़ियों, हिन्दी साहित्य प्रेमियों के समानांतर प्रवासी हिन्दी साहित्य का अध्ययन जन-जन को जोड़ सके।

शब्दकुंजी :- प्रवासी साहित्य, समकालीन विमर्श, भारत का सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, नस्लीय प्रवासी हिन्दी साहित्य में।

प्रवासी साहित्य

'प्रवासी हिन्दी साहित्य' मनोविज्ञान की एक नयी अंतर्दृष्टि है। प्रवासी वे कलमें हैं जो अपने पेड़ से कटी हुई टहनियाँ होने के बावजूद वर्षों किसी और मिट्टी-खाद-पानी में अपनी जड़ें रोपती हुई अपना बहुत कुछ खोने और नया बहुत कुछ उस नई भूमि से लेने-पाने के साथ अपने भीतर की गहराइयों में नई उर्जा सृजित करती हुई नई चेतना की कोपलें विकसित करती हैं।

प्रवासी लेखक का संवेदन संस्कार के रूप में अपने नए परिवेश को ग्रहण करता है। वह अपने जन्म-स्थान, देश और मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देशकाल तथा परिवेश में चला जाता है। वह उसी में जीवन-यापन करता है। परिवेश बदल जाने से प्रवासी के जीवन में विषमतायें और जटिलतायें आती हैं। जिस कारण उसके नए संस्कार, नया दृष्टिकोण, नए विचार, नई सोच और नई मान्यतायें बनने लगती हैं। वह पुराने मूल्यों को नए दृष्टिकोण से देखने लगता है। इन स्थानों में बसे हिन्दी लेखक विभिन्न सामाजिक परिवेशों से प्रभावित होते हैं और इन परिवेशों और परिस्थितियों को अपनी रचना का विषय बनाते हैं। इनके द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है।

प्रवास का इतिहास भले ही पुरातन क्यों न हो, लेकिन हिन्दी प्रवासी साहित्य की प्रक्रिया का वैचारिक प्रारंभ मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'यह मेरी जन्मभूमि है' से माना जा सकता है। प्रेमचंद जी की अन्य कहानी 'शूद्रा' मॉरीशस के गिरमिटिया मज़दूरों के जीवन पर आधारित है। जिसमें सामाजिक विमर्श को प्रस्तुत किया गया है। चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की हिन्दी की पहली कालजयी कहानी 'उसने कहा था' में प्रवासी भारतीय सैनिकों की एक छवि प्रस्तुत की गई है। जहाँ भारतीय सैनिकों की एक टुकड़ी प्रथम विश्व युद्ध में मित्रों राष्ट्रों की तरफ से जर्मन सेनाओं के विरुद्ध लड़ रही है। गोदान में धनिया-गोबर वार्तालाप में भी मारीच देश का उल्लेख हुआ है, जो मॉरीशस का ही अपभ्रंश माना जा सकता है। धनिया का कथन है कि, "आज साल भर बाद जाकर सुध ली है, तुम्हारी राह देखते देखते आंखें फट गयीं। यही आशा बांधे रहती थी कि, कब वह दिन आयेगा और कब देखूँगी। कोई कहता था मिरिच भाग गया, कोई डमरा टापू बताता था। सुन-सुन कर जान सूख जाती थी"। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के उदाहरण प्रवासी साहित्य में व्याप्त समकालीन विमर्श को उकेरते हुए दृष्टिगत होते हैं।

तमाम विरुद्ध परिस्थितियों के रहते हुए प्रवासी लेखकों के द्वारा अनेक समकालीन परिस्थितियों को एक वैचारिक धरातल पर, मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत भावभूमि पर उसकी पूरी सत्यता और वास्तविकता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अधिकांशतः प्रवासी साहित्य उसी भाषा में लिखा जाता है, जिसके संस्कार हमें बचपन से मिले हों। यदि अपने साहित्य की अभिव्यक्ति के लिये अंग्रेजी, फ्रेंच या स्पेनिश आदि का चयन करते हैं, तो साहित्य तो रचा जायेगा पर ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा। विदेशों में बैठा हिन्दी रचनाकार इसलिए हिन्दी लेखन करता है क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने पीछे छूट चुके देश के साथ आंतरिक संबंध और वार्तालाप बनाए रखता है। प्रवासी हिन्दी साहित्य संपूर्ण हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा है और इसका महत्वपूर्ण अंग बन रहा है। इस साहित्य में भारत का दिल धड़कता है। प्रवासी मनुष्य की विषमताओं और संघर्ष को देखकर प्रवासी हिन्दी लेखकों के हृदय में दर्द उमड़ता है और वही दर्द समकालीन विमर्श का रूप धारण कर कागज पर प्रवाहित होकर सभी का दर्द बन जाता है।

भूमंडलीकरण से प्रवास की प्रक्रिया एवं प्रवासी हिन्दी साहित्य में भी विस्तार हुआ है। जिस प्रभावशाली ढंग से हिन्दी साहित्य में विदेशों में लिखे जाने वाले हिन्दी साहित्य को पिछले दो-तीन दशकों में पहचान मिली है। इसका कारण प्रवास की प्रक्रिया में आई निरंतरता, भूमंडलीकरण, विश्व बाजार, दूरसंचार, कंप्यूटर क्रांति के साथ साथ विश्व भर में फैले हुए हिन्दी के रचनाकारों का विभिन्न माध्यमों से साहित्यिक जुड़ाव व विविध विचार-विमर्श है। प्रवासी भारतीय सम्मेलनों एवं विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने प्रवासी भारतीयों एवं प्रवासी हिन्दी साहित्य से भी लोगों को परिचित होने का अवसर प्रदान किया है। हिन्दी साहित्य पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पत्रिकाओं द्वारा प्रवासी अंक निकाला जाना, प्रवासी रचनाकारों का सम्मेलन, प्रवासी पुरस्कार आदि प्रवासी हिन्दी साहित्य की सत्ता और महत्ता को इंगित कर रहे हैं। वर्तमान में प्रवासी हिन्दी साहित्य अंतर्राष्ट्रीयकरण का सबसे सशक्त मार्ग है जो विश्व भर के व्यक्तियों की भावनाओं से अनुप्राणित है। यह विश्व भर में व्याप्त विविध विचार भूमियों को प्रस्तुत करने वाला है। मानवीय संवेदनाओं से ओतं-प्रोत हिन्दी प्रवासी साहित्य समकालीन विविध विमर्श को धारण करने वाला है।

समकालीन विमर्श :-

समकालीन विमर्श के संदर्भ में हिन्दी प्रवासी साहित्य का अनुशीलन करें तो हिन्दी प्रवासी साहित्य विभिन्न विमर्शों से ओतप्रोत है। जिसमें प्रमुख रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक, वैश्विक अनेक विविध प्रकार का विमर्श निहित है। सामाजिक संदर्भ की बात करें तो साहित्य लेखक के बाह्य वातावरण की अभिव्यक्ति से ओतप्रोत होता है इस रूप में समाज और परिवार में व्याप्त विभिन्न संदर्भ लेखक की कल्पनाओं और मनोभावों से संपृक्त हो उसके शब्दों में अवतरित होते हैं। ठीक इसी प्रकार से प्रवासी साहित्य भी लेखक के सामाजिक पारिवारिक संदर्भों से युक्त रहा है। उसमें मानवीय समाज के संबंध के प्रमुख सिद्धांत, मनुष्य एवं समाज में परस्पर अन्योन्याश्रित, पारिवारिक संबंधों में व्याप्त विविध विसंगतियों जैसे अस्थायी रिश्ते, स्त्री शोषण, आर्थिक तंगी, पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव, घरेलू हिंसा, संस्कारों का अभाव आदि विविध भावनाओं की अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है।

"टेलीफोन लाइन" कहानी प्रवासी भारतीय अवतार सिंह की कहानी है। जिसमें संबंधों में अस्थायित्व रखने वाले युवा के सामने एक समय ऐसा आता है जब उसके साथ कोई डेट नहीं करना चाहता, क्योंकि तब उसके शरीर का आकर्षण समाप्त हो गया होता है। तब वे किसी स्थायी संबंध की तलाश करते हैं। लेकिन उन्हें निराशा मिलती है। प्रस्तुत कहानी में अवतार सिंह की पत्नी पिंकी शादी के 1 साल बाद अपने पति को छोड़कर दोस्त के साथ चली जाती है। और धीरे-धीरे वह अनवर के काफी करीब आ जाती है। "पिंकी भी बिना कोई संदेश छोड़ें उसे अकेला छोड़ गई थी, पिंकी के इस तरह उसके जीवन से निकल जाने से अवतार सिंह के व्यक्तित्व पर बहुत गहरे निशान छोड़े हैं। उसे आज तक समझ नहीं आया कि कमी कहाँ रह गयी?"

प्रवासी कथा साहित्य के माध्यम से प्रवासियों के अकेलेपन और उससे निजात पाने के उपाय का जिक्र किया गया है। वहाँ जाकर उन्हें ऐसे परिवेश में रहना पड़ता है, कि उनके अमेरिकी जीवन की जिस संपन्नता से आकर्षित होकर भारतीय युवा अमेरिका गए उनका उस जीवन से मोहभंग होना स्वाभाविक है। 'अभी' शब्द कहानी ऐसे ही एक व्यक्तित्व रजनीकांत की कहानी है जिसके पिता मजदूर थे । पढ़ लिखने के बाद भी रजनीकांत को नौकरी नहीं मिली। लंदन से आई रजनीकांत की दूर की बहन से अपनी समस्या बताते हुए पिताजी ने रजनीकांत को उसके पास भेज दिया। रजनीकांत लंदन आ गया। 2 दिन उसकी आवभगत हुई और फिर हमेशा के लिए बहन के घर मुंडू बन कर रह गया।

इस प्रकार प्रवासी साहित्य भारतीयों के द्वंद्वग्रस्त जीवन को प्रस्तुत करता है, जिसमें उनके अस्थायी रिश्ते, अकेलापन, निराशा, वेदना, आर्थिक आभाव, असमर्थता, परतंत्रता अनेक सामाजिक संदर्भ देखने को मिलते हैं।

हिन्दी प्रवासी साहित्य में सामाजिक संदर्भ के अंतर्गत ही बुजुर्गों की भी विभिन्न समस्यायें देखने को मिलती है। जिन का बड़ी बारीकी के साथ चित्रण किया गया है। प्रायः देखा जाता है, कि बच्चे अपने माता-पिता को विदेश में ले जाकर उनसे

अपने बच्चों का पालन पोषण करवाते हैं। विदेशों में रहकर भी वह अपने बच्चों में अच्छे संस्कार देना चाहते हैं। पर जब वही बुजुर्ग बूढ़े हो जाते हैं तो उन पर बोझ बन जाते हैं ।

"कमरा नंबर 103" साहित्य में एमी और टैरी नामक नर्स मिसेज वर्मा के कमरे की सफाई करते हुए अमेरिका जैसे देश में वृद्ध भारतीयों की स्थिति की चर्चा करती है और उन भारतीय युवक-युवतियों को कमीना व स्वार्थी बताती है, जो अपने माता-पिता को वहाँ बुलाकर उनके प्रेम का नाजायज फायदा उठाते हैं।

प्रवासी भारतीय बुजुर्ग बीमार होने पर अकसर भय से ग्रस्त हो जाते हैं। उनको हर समय डर लगा रहता है, कि उनके बच्चे उनके प्रति स्नेह भाव रखेंगे या नहीं। यही डर बढ़ जाने पर कभी कभी वे आत्महत्या भी कर लेते हैं। प्रवासी भारतीय अकेलेपन के कारण धीरे-धीरे मानसिक रोगों के शिकार होने लग जाते हैं। बुढ़ापा उनके लिए समस्या बन जाता है। उनका मन अपने जीवन से उब जाता है और वे अपनी मृत्यु का इंतजार करने लगते हैं।

प्रवासी साहित्य में स्त्री विमर्श भी प्रमुख संदर्भ रहा है। स्त्री के प्रत्येक रूप को प्रवासी साहित्य के माध्यम से स्पष्टता के साथ दृष्टिगोचर किया जा सकता है। भारतीय प्रवासी साहित्य में बेटियों को एक खास तरह प्रवासी साँचे में ढालने की कोशिश की जाती रही है । वे आजीवन उस साँचे में मन मारकर माता-पिता के साथ रहती हैं। जो बेटियाँ मन मारकर माता-पिता के अनुसार नहीं रहती हैं, वे अनुपयुक्त सिद्ध होती हैं। जो आग्रहशील, संघर्षशील होती हैं, वे मर्यादाहीन, संस्कारहीन और चरित्रहीन घोषित कर दी जाती हैं। दुनिया के इतिहास में बेटी चाहे पश्चिम के विकसित राष्ट्रों की हो अथवा स्वदेशी हों, वह लिंग भेद की राजनीति में बुरी तरह से जकड़ी हुई है। 'चिड़िया और चील' कहानी में अमेरिका में पली बढ़ी चिड़िया की शादी माता-पिता अपनी मर्जी से करना चाहते हैं किंतु चिड़िया इस बात के लिए तैयार नहीं है। माता-पिता की इस बात का विरोध करते हुए वह कहती है, "ये कैसा खिलवाड़ कर रहे हो तुम लोग, जिसे न जानती, न बूझती, उसके साथ जिंदगी बिताऊंगी। क्या बेवकूफ समझ रखा है तुमने मुझे, यह नहीं होगा"।

पश्चिमी समाज में भारतीय नारी माँ, पत्नी और बेटी की भूमिका अदा करने के साथ-साथ प्रेयसी की भी अहम भूमिका निभा रही है। जिस प्रकार वह अन्य भूमिका में शोषित हो रही है, उसी प्रकार इस रूप में भी उसका शोषण देखा गया है। प्रवासी साहित्य में देखा गया है, कि वहाँ के व्यस्त और संघर्षशील जीवन से ऊबकर पुरुष, प्रेयसी के आंचल में अपने मन मस्तिष्क को हल्का करता है। इस प्रेम के पीछे कई बार इतना गहरा जाल बना होता है कि, प्रेम में अंधी प्रेयसी को वह दिखाई नहीं देता। पुरुष का स्वभाव कुछ है ही ऐसा कि, वह प्रेयसी और पत्नी दोनों में से किसी को भी नहीं खोना चाहता। यदि कोई स्त्री पुरुष के साथ प्रेम संबंध बनाना चाहती है, तो पुरुष अपनी इच्छा को ही महत्त्व देता है। "अजन्मा एहसास" कहानी की नायिका सुधा की शादी रमित से हुई थी। मगर तलाक के बाद सुधा को अकेलापन महसूस होने लगा। ऐसे में उसे एक दिन रवि का फ़ोन आया, रवि उससे चार-छह बरस छोटा था। रवि की माँ को सुधा मौसी कहती थी। रवि के आग्रह करने पर सुधा उसके घर गई। वहाँ रवि की माँ ने पहले ही खाना तैयार कर रखा था बस खाना खत्म कर ताश खेलने बैठ गये। खेलते-खेलते उनको रात के 2:00 बज गये। इस प्रकार एक बार फिर रवि के जाल में फंसकर सुधा पुन: अकेले रह जाती है।

पश्चिमी समाज में अकेले प्रवास कर रही भारतीय नारी को अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। अकेला देखकर हर कोई उसका फायदा उठाना चाहता है। उस समय उसे सहारे की भी आवश्यकता होती है। ऐसी परिस्थितियों में अक्सर ही वह किसी न किसी के प्रेम जाल में फंस जाती है। बहुत किस्मतवाली होती है ऐसी नारी, जिसके सामने ऐसे पुरुष की सच्चाई आ जाती है। प्रवासी भारतीयों के रिश्तेदार या जान-पहचान वाले भी इनका खूब लाभ लेना जानते हैं। इनके द्वारा विदेश जाने का लालच, भारत आये प्रवासियों या भारत से विदेश जा रहे रिश्तेदारों की खूब खातिरदारी करवाना है। विदेश में केवल

भारतीय नारी ही नहीं शोषित है, बल्कि विदेशी नारी भी इस जाल में फंसी हुई है। जिसके कटु सत्य को प्रवासी साहित्य में बड़ी सूक्ष्मता के साथ उतारा गया है।

'तीसरी दुनिया का मसीहा' की नायिका अपने ससुराल वालों द्वारा शोषित हैं। वह ब्रूनो नामक दूसरी नस्ल के लड़के से प्रेम कर बैठती है। ब्रूनो भी उसे सच्चे प्रेम का अहसास करवाता है। नायिका अपने पति को छोड़ चुकी है। अब वह ब्रूनो को जीवन साथी के रुप में देखती है। एक दिन ब्रूनो उसे अपनी बेटी के बारे में बताता है। वह प्रेमवश उसे भी स्वीकार करने के लिए तैयार है। नायिका का मन तब टूटकर चूर-चूर हो जाता है, जब उसे पता चलता है कि एक भारतीय स्वामी जी के कहने पर ब्रूनो उसे छोड़ने के लिए तैयार हो गया है। अपनी सच्ची प्रेयसी को छोड़ने में वह पल भर भी देर नहीं करता।

इस प्रकार हिन्दी प्रवासी साहित्य में प्रवासी भारतीय नारी के विविध रूप और उनकी विसंगति देखने को मिलती है। जिसमें उसके शोषण, तनाव और निराशा का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

हिन्दी प्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक विमर्श की ओर ध्यान दिया जाए तो आजादी के बाद भारतीयों का अधिकतर प्रवास विकसित देशों की ओर हुआ है। विकसित देशों का सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश भारत से पूर्णतः भिन्न है और इस भिन्नता के कारण प्रवासी भारतीयों के जीवन में संघर्ष उत्पन्न हुआ है। वे मानसिक रूप से इस दोहरी जिंदगी को अपनाने में असमर्थ रहे हैं। दोहरे जीवन से उत्पन्न समस्याओं ने उनके अंदर कुंठा, निराशा जैसे भावों को जगा दिया है। यहीं से उनका सांस्कृतिक संघर्ष प्रारंभ होता है, जिसे अंग्रेजी में 'कल्चरल शॉक' कहते हैं।

विदेशों में भारतीय संस्कृति उन्हें दूसरों से अलग करती है। क्योंकि उनका भोजन, पहनावा, धार्मिक आचार विचार, भाषा, मान्यताएँ और रीति-रिवाज विदेशी समाज में एक अलग पहचान देने वाले होते हैं। प्रवासी भारतीय के पास उसका भारतीय रिश्तेदार अपने बच्चे को भेजना चाहता है, तब कोई कठिनाई नहीं होती। पर विदेश में पले-बढ़े बच्चों को यदि किसी कारणवश भारतीय रिश्तेदार के पास छोड़ना पड़ जाए, तो वह भारतीय उसके लिए तैयार नहीं होते। उनको ऐसा लगता है कि वे जिस स्वतंत्र माहौल में पले हैं उसका असर उनके बच्चों पर न पड़ने लगे। 'अपराध बोध का प्रेत' साहित्य की कथा इसी संदर्भ को समेटे हुए है। जिसकी पात्र सुरभि कैंसर के बाद अपने बच्चों को लेकर अत्यधिक चिंतित है। क्योंकि उसकी माँ सुरभि के बच्चों के अलग माहौल में पले होने के कारण उन्हें अपने पास रखने से इनकार कर देती है।

इसी प्रकार सुषमा बेदी की 'झाड़' कहानी में विदेश में पले बच्चों के सांस्कृतिक अंतर को दर्शाया गया है। विदेशों में बच्चों को बचपन से ही आत्मनिर्भर बनाने की शिक्षा दी जाती है। मगर प्रवासी भारतीय अपने बच्चों को स्वतंत्रता नहीं देना चाहते हैं। उनके हर काम में वह दखल देते हैं। यह उनका अपने बच्चों के साथ मोह है। मगर बच्चों को पाश्चात्य संस्कृति के साथ सामंजस्य बनाने के लिए स्वतंत्रता चाहिए होती है।

इस प्रकार हिन्दी प्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक विमर्श के अंतर्गत उन संघर्षरत समस्याओं को उजागर किया गया है, जिनके मध्य भारतीय प्रवासी दो पाटों के बीच स्वयं को पिसता हुआ देखता है। न तो वह पाश्चात्य संस्कृति का हो पाता है और ना ही भारतीय रह पाता है। जीवनभर वह सांस्कृतिक संघर्ष को झेलता है।

धर्म और आस्था भारतीय जीवन का मूल है। हिन्दी प्रवासी साहित्य में समकालीन विमर्श के अंतर्गत धार्मिक संदर्भ का संघर्ष भी देखने को मिलता है। पश्चिम समाज में ईसाई धर्म की प्रधानता है, जबकि भारत से गये प्रवासी अलग-अलग धर्मों के हैं। इनकी पीढ़ियाँ ईसाई धर्म की ओर आकर्षित न हो जायें इसलिए यह अपने धर्म से जुड़े रहना चाहते हैं। पश्चिमी समाज में रहते हुए भी भारतीय प्रवासी मातृभूमि को कतई नहीं छोड़ना चाहते और न ही दूसरे धर्म का सहारा लेना चाहते हैं। अतः यह भावना उनके और उनकी आने वाली पीढ़ियों के मध्य संघर्ष को उत्पन्न करती है।

'जोगिया सितारा' कहानी में न्यूयॉर्क में पली-बढ़ी रमणा पर पाश्चात्य सभ्यता का गहरा असर है, जिसके कारण वह अपनी माँ रमा को अहमियत नहीं देती और रमा अंदर ही अंदर घुटती जा रही है। क्योंकि उसे हमेशा डर लगा रहता है, कि

कहीं रमणा किसी विदेशी लड़के को अपने जीवन में न उतार ले। कहीं वह भारतीय धर्म और आस्था से विमुख होकर किसी अन्य धर्म को न अपना ले। अंत में यही होता है। रमणा भारतीय संस्कारों के विपरीत अमेरिकी परिवार के लड़के मनरो को अपनी माँ रमा से मिलाने लाती है। जहाँ वे दोनों शादी करने वाले होते हैं।

इस प्रकार हिन्दी प्रवासी साहित्य समकालीन विमर्श के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के जीवन के विविध स्वरूपों को अभिव्यक्त करता है। वह प्रवासी भारतीयों के ऐसे विभिन्न अनकहे पहलुओं को, उनकी सत्यता को, वास्तविकता को प्रकट करते हुए भारतीय प्रवासियों के हृदय की वेदना और पीड़ा को उजागर करने वाला है। ऐसा प्रतीत होता है कि, हिन्दी प्रवासी साहित्य मानो भारतीय प्रवासियों के सत्य और यथार्थ के धरातल पर व्याप्त जगमगाती दुनिया के मध्य छिपे हुए अंधकार को प्रकट करने वाला है। जो दिखता भले न हो लेकिन अत्यधिक गहरा और काला है वास्तव में हिन्दी प्रवासी साहित्य में व्याप्त विविध विमर्श अनुशीलन करने योग्य है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि, हिन्दी प्रवासी साहित्य उन विविध विमर्शों की समष्टि है जो प्रवासी जीवन को चारों ओर से घेरे हुए है। भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति के मध्य व्याप्त संघर्ष, धार्मिक आस्थायें, बुजुर्गों की समस्यायें, नारी शोषण, बचपन की स्वतंत्रता, खान-पान, रहन-सहन की समस्या, पालन-पोषण की समस्या, अकेलेपन की समस्या, निराशा, अवसाद, वेदना, घुटन, घरेलू हिंसा, आपसी संघर्ष, अपनों से बेगानापन, पीढ़ियों का अंतर्द्वंद्व, नैतिक मूल्यों का ह्रास, पश्चिमी सभ्यता की ओर बढ़ावा, अपनी संस्थाओं प्रथाओं और मान्यताओं को बचाकर रखने का संघर्ष, अपने संस्कारों को दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करने का संघर्ष आदि विविध समकालीन विमर्श को समेटे हुए प्रवासी साहित्य निरंतर भारतीय साहित्य पर अपनी पहुँच बनाता चला जा रहा है। आज हिन्दी प्रवासी साहित्य जन-जन को विदेशी जीवन की सत्यता के दर्शन कराने वाला है। किस प्रकार विदेशों में कूच कर गए प्रवासी भारतीय, बाह्य रूप से चमक दमक से मंडित होकर भी आंतरिक रूप से गहन अंधकार में डूबे हुए हैं। यह साहित्य इस अंतर्द्वंद्व को अभिव्यक्त करने वाला है। हिन्दी प्रवासी साहित्य अपने आप में एक विशिष्ट साहित्य है, जिसके अंदर अनेक हृदयों की अभिव्यक्ति निहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अनिल जोशी - प्रवासी लेखन : नई जमीन नया आसमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2018.

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरिक प्रचारिणी सभा, काशी, 1999.

कमलकिशोर गोयनका - प्रवासी साहित्य : एक सर्वेक्षण, प्रवासी साहित्य, जोहान्सबर्ग से आगे, विदेश मंत्रालय भारत सरकार 2015.

कमलेश्वर - वही बात, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1972.

कालीचरण स्नेही – संपादक- हिन्दी का प्रवासी साहित्य, आराधना ब्रदर्स, कानपुर 2018.

प्रदीप श्री श्रीधर (संपादक)- प्रवासी हिन्दी साहित्य : अवधारणा एवं चिंतन, वाणी प्रकाशन कानपुर 2018.

मनोरम मिश्र - मिथकीय चेतना : समकालीन संदर्भ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2007.

मिनी जॉर्ज - कमलेश्वर का कथा साहित्य -समकालीन समस्याओं का जीवंत आलेख, अमन प्रकाशन, कानपुर 2013.

अपनी माटी, प्रवासी दुनिया- प्रवासी विमर्श और सुषमा बेदी का उपन्यास, त्रैमासिक ई पत्रिका, मार्च) वर्ष तीन, अंक 24, 2017.